Pallava Architecture (Mahabalipuram Rathas)

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – III, B.A. 2nd Year

महाबलीपुरम के रथ (Ratha's of Mahabalipuram) - पल्लव स्थापत्य के प्रथम समूह के द्वितीय भवन निर्माण शैली नरसिंह वर्मन के काल में विकसित हुई जिसमें मंडप के साथ - साथ रथों का भी निर्माण हुआ। जैसा कि सर्वविदित है कि इसने अपने नाम पर महाबलपुर नामक एक नगर बसाया था जो मद्रास से 32 मील दक्षिण पलार नदी के मुहाने पर स्थित है। इसके उतर दक्षिण आग्नेय चट्टानों की एक विस्तृत श्रृंखला है। इसी माम्लय शैली के भवन निर्मित है, मंडपों की संख्या 10 है। नरसिंह वर्मन द्वारा निर्मित रथों के साथ - साथ पल्लव स्थापत्य शैली में द्वितीय चरण का सूत्रपात होता है। इन भवनों की बाहय रुपरेखा रथों के सदृश्य है, अतः इनका प्रयोग देवालय के रूप में होता है।

मंडपों की भांति रथों का निर्माण चट्टानों को काटकर एवं खोखला बनाकर किया गया है किन्तु दोनों की निर्माण पद्धति में प्रयाप्त अन्तर है। मंडप चट्टान को खोदकर बनाया गया है जबकि रथ एकाश्मक है, ये किसी संरचनात्मक भवन की तरह प्रतीत होते है। सामान्य आकार के इन रथों की संख्या आठ है, इसमें द्रौपदी रथ के अतिरिक्त अन्य सात रथों का निर्माण योजना चैत्यों एवं विहारों के सदृश्य है, इसलिए ये सप्त पेगोडा के नाम से विख्यात है। इन सात रथों में धर्मराज रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ और सहदेव रथ का निर्माण पर्वत के दक्षिणी छोड़ पर किया गया तथा गणेश रथ उतरी छोड़ पर निर्मित है। पर्वत के उतरी - पूर्वी छोड़ पर वलैयन कुट्टई - रथ और पीदरी रथ स्थित है, लेकिन

वास्तुकला के दृष्टिकोण से ये दोनों रथ विशेष के नहीं है। स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से ये सारे रथ बौद्ध धर्म से सम्बंधित दिखते है। लेकिन साथ ही साथ गज, सिंह तथा वृषभ की उत्कीर्ण मूर्तियाँ शैव धर्म की प्रधानता साबित करती है क्या इसपर शैव एवं बौद्ध दोनों धर्म का प्रभाव मानना चाहिए, यथार्त यही है इस पर किसी भी धर्म का प्रभाव नहीं है। तीन चैत्य कक्ष वाले भवन की छत के तिकोने भाग में प्रतीकात्मक विषय के अंकन तथा प्रत्येक देवालय में अंकित विभिन्न प्रकार की कथावस्तु इसकी संपुष्टि करती है। ये रथ धर्मनिरपेक्ष है। इन सभी रथों की स्थापत्य शैली एक है। इनका निर्माण स्रोत भी एक ही है।

महाबलिपुरम स्थित रथों में सबसे बड़ा धर्मराज रथ है। इसकी योजना वर्गाकार है। इसकी लम्बाई 42 फुट, चौड़ाई 35 फुट और ऊंचाई 40 फुट है। रथ की निर्माण योजना बौद्ध विहारों से प्रभावित लगता है। बौद्ध विहारों में एक कक्ष और परांगन की व्यवस्था रहती थी। भिक्षुओं की संख्या में वृद्धि के साथ भीतरी भाग को स्तम्भ युक्त सपाट छतों से ढक दिया। बाद में आवश्यतानुसार इसमें उपर भी कक्ष बनाये गए जिनकी छत गुम्बजाकर होती थी। धर्मराज रथ की मूल योजना इस प्रकार की है जो यह प्रमाणित करता है कि किस प्रकार बौद्ध विहारों को कालांतर में शायद हिन्दू देवालयों में परिवर्तित कर दिया गया। यह रथ पूर्णतः निर्मित है। इसका बाह्य भाग स्थापत्य शैली की दृष्टि से उत्कृष्ट है तो भीतरी भाग बनावट की दृष्टि से। उपरी भाग दो खंडो में नियोजित है (१) वर्गाकार भाग जिसके नीचे स्तम्भ युक्त मंडप है (११) शुन्डाकार भाग जो गर्भगृह के उपर निर्मित है। धर्मराज रथ का आधार भाग अलंकृत है। इसके साथ ही साथ सिंह स्तम्भ युक्त मंडप तथा शिखर युक्त छत भी भव्य है।

बौद्ध चैत्य पद्धति पर निर्मित सहदेव रथ, भीम रथ और गणेश रथ की स्थापत्य शैली भी उत्कृष्ट है। इन आयताकार रथों में दो या दो से अधिक मंजिलों की योजना है।

इनकी छत पीपे की भांति खोखला है और उपरी भाग जहाज की पेंदी जैसा है जिसका शीर्ष भाग तिकोना है । भुवनेश्वर के बैताल देवल और ग्वालियर के तेली के मन्दिर से इन रथों की साम्यता है । इन तीनो रथों में गणेश रथ की बनावट भिन्न है, वस्तुतः इसमें भीम और सहदेव दोनों रथों की निर्माण शैली का समावेश है । अंतर केवल इतना है कि गणेश रथ का प्रवेश द्वार स्तम्भयुक्त मंडप में खुलता है। इसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि द्रविड़ स्थापत्य शैली के प्रमुख अंग गोपुरम की कल्पना इन प्रवेश द्वारों से की गई है। वास्तव में ये तीनों रथ मन्दिर के ही एक रूप है जो भविष्य में दक्षिण भारत के नवीन स्थापत्य शैली के रूप में विकसित हुए।

इन रथों में द्रौपदी रथ का आकर सबसे छोटा है, यह पूर्ण तथा निर्मित है। इसकी बनावट तम्बू के सदृश्य तिकोना है । हो सकता है कि इसे शोभा यात्रा के प्रतिक स्वरुप बनाया गया होगा । अलंकरण का आभाव इस रथ की विशेषता है, स्थापत्य नवीनता के कारण अपने समूह के रथों से यह पृथक श्रेणी का दिखता है इसके आधार भाग में सिंह और गज की मूर्तियाँ नियोजित है। इसको इस ढंग से नियोजित किया गया है मानों रथ का भार ग्रहण कर रहे थे ।

इन रथों के विश्लेषण से स्थापत्य सम्बन्धी वास्तु विशेषज्ञों के लिए समस्या पैदा करते है (i) रथों के भीतरी भाग अधूरे क्यों है (ii) रथों में उनके प्रतिरूप क्यों अंकित है (iii) प्रत्येक रथ स्वतंत्र रूप से निर्मित किये गये । कतिपय विद्वानो का यह मत है कि इन रथों के माध्यम से शिल्पियों ने निजी भावना को अभिव्यक्त किया है । कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार रथों के निर्माण में दार्शनिक भावना निहित थी, लेकिन स्पष्ट होकर कुछ कहना कठिन है । मामल्लपुरम के एकाश्मक तथा चट्टानों को खोदकर बनाये गए भवनों का निर्माण पुर्णतः वही हो सका। संभवतः राजनैतिक उथल - पुथल के कारण शिल्पियों को अपना व्यवसाय बंद करना पड़ा, हालाँकि यह सत्य है कि इतिहास ऐसी किसी घटना का

उल्लेख नहीं करता । एक संभावना यह है कि 647 ई. में नरसिंह मामल्ल की मृत्यु के कारण मामल्ल/मामल्य स्थापत्य शैली का अंत हो गया । आगे का कार्य शायद इसी कारण से रुक गया ।

मामल्ल/मामल्य शैली के इन भवनों के अतिरिक्त कुछ अन्य भवनों के भी भग्नावशेष मिले है । वास्तुकला के अध्ययन के लिए ये अति उपयोगी है । इन भग्नावशेषों में एक दुर्ग का अवशेष अब भी वर्तमान है। यह एक राजप्रसाद था जिसकी नींव ऊँची और ठोस थी, संभवतः यह ईट और लकड़ी का बना है । इसकी दीवारों में संभवतः प्लास्टर किया गया था । इन महलों में अर्द्ध स्तम्भों का प्रयोग भी दिखता है । इसके आधार पर यह भी निष्कर्ष निकालने का प्रयास हुआ है कि शायद धार्मिक भवन चट्टानों को काटकर या खोदकर बनाये जाते थे, जबकि लौकिक भवनों का निर्माण ईट और लकड़ी से किया जाता था ।

धार्मिक भवनों में पुष्कर्णी या जलकुण्डों की योजना प्रमुख अंग के रूप में की गई है । भारतवर्ष के कुछ मंदिरों में मामल्य शैली का यह प्रभाव स्पष्ट रूप से लक्षित होता है । भारत के अतिरिक्त अंकोरवाट, जावा और बोरोबुदुर के मन्दिर भी इस शैली से प्रभावित है । पल्लव स्थापत्य शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्रायः सभी मंडप और रथ कलात्मक मूर्तियों से सुसज्जित है। एलोरा के कैलाशनाथ और एलिफैन्टा में भी इस प्रकार की मूर्तियों का अलंकरण है, किन्तु ये बाद की रचनाएँ है । अतएव, इन्हें पल्लव स्थापत्य की देंन कहना अधिक उपयुक्त होगा । मामल्लपुरम की मूर्तियों में उत्तेजना एवं तीक्ष्णता है । इनकी स्वतंत्र मूर्तियाँ सौम्य, परिश्कृष्ट एवं परिमार्जित है । ये मूर्तियाँ अत्यंत सजीव एवं कलात्मक है । पर्सी ब्राउन महोदय का मत है कि पल्लव शैली पर आधृत होने के कारण ही जावा और कम्बोडिया की मूर्तियाँ उत्कृष्ट एवं कलात्मक है।

लती है ।